जनसत्ता

बिगड़ती हवा

राजधानी दिल्ली की हवा फिर खराब हो रही है। हर साल की तरह यह चेतावनी मिलनी शुरू हो गई है। वायु प्रदूषण लंबे समय से दिल्ली की बड़ी समस्या बना हुआ है, लेकिन अक्तूबर-नवंबर के महीने में यह समस्या उस वक्त ज्यादा गंभीर रूप धारण कर लेती है जब पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश के खेतों में पराली जलाने से होने वाला धुआं दिल्ली के आसमान पर परत बन कर छा जाता है। यह हर साल की समस्या है। इससे दिल्ली की आबादी का बड़ा हिस्सा सांस और फेफड़े की बीमारियों का शिकार होता है और लोग अस्पतालों की ओर भागने को मजबूर होते हैं। लेकिन इतना सब कुछ होने और झेलने के बाद भी अगर पराली जलाने पर रोक नहीं लग पा रही है तो यह केंद्र और राज्य सरकारों की असफलता ही मानी जाएगी। पराली जलाने के मसले पर पिछले तीन साल में सुप्रीम कोर्ट तक ने कड़े निर्देश दिए, पर्यावरण मंत्रालय की निगरानी में टीमें बनाईं जो पराली जलाने के विकल्प खोजे और राज्य सरकारों को पराली जलाने वाले किसानों पर कड़ी कार्रवाई करने के निर्देश दिए, पर इन सबका कोई ठोस नतीजा अब तक सामने आया नहीं है।

चिंता की बात यह है कि इस बार पराली जलाने की घटनाएं कम होने के बजाय और बढ़ी हैं। हालांकि केंद्र और पंजाब सरकार की ओर से दावे किए जा रहे हैं कि पराली जलाने की घटनाओं में कमी आ रही है। लेकिन पंजाब सरकार के प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के मुताबिक इस बार बारह अक्तूबर तक पंजाब में पराली जलाने की छह सौ तीस घटनाएं दर्ज की गई हैं। जबकि पिछले साल इसी अवधि में चार सौ पैंतीस मामले दर्ज हुए थे। हरियाणा में कई जगह पराली जलाई जा रही है। दरअसल, किसानों के सामने मजबूरी यह है कि पराली जलाएं नहीं तो करें क्या! किसानों को पराली नष्ट करने का विकल्प सुझाने में सरकारें नाकाम रही हैं। जबकि दावे तो ये किए जा रहे हैं कि कई जगहों पर पराली कटवा कर बिकवाई जा रही है, लेकिन अगर ऐसा है भी तो बहुत ही कम जगहों पर। ज्यादातर किसानों के समक्ष आज भी पराली जलाने के अलावा कोई और रास्ता नहीं है। पिछले साल पंजाब सरकार ने किसानों को पराली नष्ट करने की मशीनें देने की योजना बनाई थी, लेकिन ज्यादातर किसान गरीब हैं और वह योजना इनके लिए निरर्थक साबित हुई। ऐसे में पराली का किया क्या जाए, किसी को समझ नहीं आ रहा। देश में कृषि विशेषज्ञों की कमी नहीं है, कृषि विश्वविद्यालयों से लेकर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद जैसे बड़े वैज्ञानिक संस्थान हैं, लेकिन पराली का धुआं न निकले, इसका इलाज कोई नहीं कर पा रहा। यह पराली जलाने से ज्यादा चिंताजनक है।

हाल में अमेरिकी अंतरिक्ष एजंसी नासा ने पंजाब के खेतों में जलती पराली की तस्वीरें जारी की थीं। हालांकि पंजाब सरकार का तर्क है कि धुआं सिर्फ पराली का नहीं है, इसमें कचराघरों और श्मशानों से उठने वाला धुआं भी शामिल है। दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण रोकने के लिए थोड़े-बहुत जो प्रयास हुए हैं उनका कुछ असर दिखा भी है। लेकिन व्यापक स्तर पर जिस कवायद की जरूरत है वह दिखाई नहीं देती। सबसे बड़ी समस्या सड़कों पर अभी भी पंद्रह साल से ज्यादा पुराने डीजल वाहनों का दौड़ना है। आज भी ऐसे वाहनों की संख्या लाखों में है। लेकिन सरकार ऐसे वाहनों पर रोक लगाने में पूरी तरह नाकाम साबित हुई है। इसके अलावा दिल्ली के कुछ खास इलाकों को छोड़ दें तो अनेक जगहों पर कचरा जलते देखा जा सकता है। सरकार अपने स्तर पर कदम तो उठा रही है, लेकिन लोगों को जागरूक करना ज्यादा बड़ी चुनौती साबित हो रही है।

कुर्दों पर हमले

उत्तर-पूर्वी सीरिया में कुर्द सैनिकों और तुर्की की सेना के बीच पिछले पांच दिन से चल रही लड़ाई ने इस क्षेत्र को गंभीर संकट में झोंक दिया है। तुर्की की सेना सीरिया के उत्तर-पूर्व में कुर्द बहुल इलाकों में ताबड़तोड़ हमले कर रही है और कुर्दों पर कहर बरपा रही है। बड़ी संख्या में लोगों के मारे जाने और जख्मी होने की खबरें हैं। लाखों बेघर हो गए हैं। इससे गंभीर मानवीय संकट खड़ा हो गया है। तुर्की की सेना ने सीरियाई शहर सुलूक पर कब्जा कर लिया है। पश्चिम एशिया का यह क्षेत्र युद्ध के नए अखाड़े में तब्दील हो गया है। मामला ज्यादा गंभीर रूप इसलिए ले चुका है कि इस संकट के मूल में अमेरिका है। उसके अपने हित हैं, ऐसे में इस समस्या के सुलझने के आसार दूर-दूर तक नहीं हैं।

अब यह साफ हो चुका है कि अगर अमेरिका सीरिया और तुर्की की सीमा से अपने सैनिकों को हटाने का फैसला नहीं करता तो आज हालात नहीं बिगड़ते। ट्रंप अगले राष्ट्रपति चुनाव की तैयारियों में जुटे हैं और उन्होंने अमेरिकी जनता से वादा किया है कि अफगानिस्तान और सीरिया जैसे देशों से अमेरिकी सैनिकों की वापसी होगी। अफगानिस्तान से तो यह संभव नहीं हो पाया है, लेकिन सीरिया में इस फैसले का असर तुर्की के हमले के रूप में आया है। अमेरिकी सैनिकों के हटते ही तुर्की ने कुर्दों के नियंत्रण वाले ठिकानों पर हमले शुरू कर दिए। तुर्की में बीस फीसद कुर्द आबादी है। तुर्की कुर्दों को आतंकवादी करार देता आया है। दरअसल, इराक, सीरिया और तुर्की के कुर्द बहुल क्षेत्र में रहने वाले कुर्द सुन्नी मुसलमान हैं और लंबे समय से अलग कुर्दिस्तान राष्ट्र के गठन के लिए लड़ रहे हैं। ऐसे में तुर्की को यह डर सता रहा है कि अगर अलग कुर्दिस्तान राष्ट्र बन गया तो उसके यहां की बीस फीसद कुर्द आबादी भी उसके लिए बड़ा संकट बन जाएगी।

ट्रंप ने कुर्दों की वफादारी पर सवाल उठाते हुए यहां तक कह डाला कि इस्लामिक स्टेट (आइएस) के साथ लड़ाई में कुर्दों ने अमेरिका का साथ नहीं दिया। जबकि इराक में सद्दाम हुसैन की सत्ता को उखाड़ फेंकने में अमेरिका का सबसे ज्यादा साथ तो कुर्द लड़ाकों ने ही दिया था। सीरिया में भी आइएस के लड़ाकों से मुकाबले में अमेरिका के साथ कुर्द ही कंधे से कंधा मिला कर खड़े रहे हैं। अब संकट यह भी है कि तुर्की के हमलों के इस इलाके में आइएस फिर से सक्रिय हो सकता है। कुर्द सैनिकों ने बड़ी संख्या में आइएस के लड़ाकों को स्थानीय जेलों और शिविरों में बंद कर रखा था। लेकिन हमले के बाद आइएस के ज्यादातर लड़ाके भाग निकले हैं। पश्चिमी देशों सहित सऊदी अरब जैसे देश तुर्की की इस कार्रवाई के खिलाफ हैं, वहीं पाकिस्तान ने तुर्की के रुख का समर्थन किया है, क्योंकि कश्मीर के मुद्दे पर तुर्की पाकिस्तान के साथ खड़ा है। लेकिन भारत ने सीरियाई क्षेत्र की संप्रभुता की रक्षा पुरजोर वकालत करते हुए तुर्की के हमलों की कड़ी निंदा की है और इसे गंभीर मानवीय संकट बताया है। पर बड़ा सवाल यह है कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई का झंडा उठाने वाला अमेरिका अपने स्वार्थ के लिए कब तक निर्दोष नागरिकों को युद्ध की आग में झोंकता रहेगा!

कल्पमेधा

अपनी गलती स्वीकार कर लेने में लज्जा की कोई बात नहीं है। इससे दूसरे शब्दों में यही प्रमाणित होता है कि कल की अपेक्षा आज आप अधिक समझदार हैं।

-अलेक्जेंडर पोप

रिश्तों की कूटनीति में भारत का बाजार

संजीव पांडेय

इन दिनों चीन खुद अमेरिका के साथ व्यापार युद्ध में उलझा है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के व्यापार युद्ध ने चीन के उद्योगों और विकास दर को प्रभावित करना शुरू कर दिया है। चीनी निर्यात पर अमेरिका द्वारा बढ़ाए गए शुल्क का असर चीनी अर्थव्यवस्था पर तेजी से पड़ रहा है। इस स्थिति में भारत का विशाल बाजार चीन के लिए बड़ी ताकत बना हुआ है।

महाबलीपुरम में चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बीच दोनों मुल्कों में आपसी रिश्तों को बेहतर बनाने के लिए बात हुई। इसी में आतंकवाद से लेकर कारोबार, सीमा विवाद आदि मुद्दे भी आए। दोनों पक्षों ने 'चेन्नई कनेक्ट' को भारत-चीन संबंधों में नए युग की शुरुआत बताया है। उम्मीद की जा रही है कि वुहान से आगे महाबलीपुरम में विश्वास और बढ़ा है। यह पूरे दक्षिण एशिया के विकास, क्षेत्रीय सहयोग और शांति के लिए जरूरी है। सहयोग और शांति के लिए संवाद ही महत्त्वपूर्ण उपाय है। हालांकि भारत-चीन के बीच तमाम विवादों का हल निकालने में चीन ने पिछले साठ सालों में कोई खास रुचि नहीं दिखाई है। लगभग साढ़े तीन हजार किलोमीटर लंबी भारत-चीन सीमा को लेकर दोनों देशों के बीच काफी लंबे समय से विवाद है। जम्मू-कश्मीर को लेकर चीन पूरी तरह से पाकिस्तान के साथ है। भारत-चीन के बीच होने वाले द्विपक्षीय व्यापार में व्यापार संतुलन चीन के पक्ष में है। व्यापार संतुलन चीन के पक्ष में होने के कारण भारत की अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक असर पड़ा है। भारत के निर्यात घाटे का असर अर्थव्यवस्था पर पड़ा है। इसके अलावा चीन बंगाल की खाड़ी से लेकर अरब सागर और हिंद महासागर तक में भारत की घेरेबंदी कर रहा है और अपनी सामरिक स्थिति मजबूत कर रहा है।

लंबे समय तक तनाव के बाद राजीव गांधी की सरकार ने चीन के साथ संवाद शुरू किया था। उनके कार्यकाल में विदेश सचिव स्तर पर भारत और चीन की बातचीत शुरू हुई थी। इस परंपरा को अटल बिहारी वाजपेयी के कार्यकाल में जारी रखा गया। अब दोनों मुल्कों के मुखिया अनौपचारिक बैठक कर रहे हैं। समय की मांग यही है कि दोनों देशों के बीच संवाद से विश्वास कायम हो। इसी में दोनों देशों का हित है। पर इसके लिए जरूरी है कि संवाद यथार्थ के धरातल पर हो। हमें स्वीकार करना होगा कि चीनी विदेश नीति चीन के हितों पर आधारित है। चीन भारत से बातचीत के दौरान कहीं भी अपने हितों का त्याग नहीं करेगा। चीन भारत का विशाल बाजार नहीं खो सकता। भारतीय बाजार में चीनी उत्पादों की भरमार ने सिर्फ भारत के व्यापार घाटे को नहीं बढ़ाया है, बल्कि भारतीय कृषि और उद्योग जगत की कमर तोड़ दी है। इसे आंकड़ों से समझने की जरूरत है। 2018-19 में भारत का कुल व्यापार घाटा एक सौ तीन अरब डॉलर था। इसमें चीन की भागीदारी तिरपन अरब डॉलर की थी, आधे से भी ज्यादा। चीनी निर्यात ने भारतीय कृषि और उद्योग जगत को खासा नुकसान पहुंचाया है। वुहान और महाबलीपुरम दोनों ही बैठकों में व्यापार संतुलन पर बातचीत हुई, लेकिन इसका परिणाम क्या होगा, इसका फिलहाल अंदाज लगा पाना मुश्किल है।

इन दिनों चीन खुद अमेरिका के साथ व्यापार युद्ध में उलझा है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के व्यापार युद्ध ने चीन के उद्योगों और विकास दर को प्रभावित करना शुरू कर दिया है। चीनी निर्यात पर अमेरिका द्वारा बढ़ाए गए शुल्क का असर चीनी अर्थव्यवस्था पर तेजी से पढ़ रहा है। इस स्थिति में भारत का विशाल बाजार चीन के लिए बड़ी ताकत बना हुआ है। चीन जल्द से जल्द सोलह देशों के बीच प्रस्तावित मुक्त व्यापार संधि (क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक साझेदारी) को लागू करवाने की कोशिश में है, क्योंकि इससे सबसे ज्यादा लाभ चीन को ही होना है। भारत भी इस संधि में भागीदार बनने जा रहा है। हालांकि भारतीय कृषि और उद्योग जगत ने इस संधि का कड़ा विरोध किया है। इस संधि में शामिल होने के बाद भारत के कृषि उत्पाद, वस्त्र, इस्पात सहित कई बड़े उद्योग प्रभावित होंगे। डेरी क्षेत्र को भी इससे नुकसान पहुंचेगा। इस संधि में भारत के शामिल होने के बाद चीनी सामान से भारतीय बाजार भर जाने की आशंका भी जताई जा रही है।

इस बात को पूरी दुनिया मान रही है कि चीन एक बहुत बड़ी आर्थिक ताकत है। चीन की अर्थव्यवस्था इस समय चौदह लाख करोड़ डॉलर की है। यह भारत की अर्थव्यवस्था से पांच गुनी बड़ी है। भारत की अर्थव्यवस्था पौने तीन लाख करोड़ डॉलर की है। आठवें दशक तक भारत की अर्थव्यवस्था का आकार चीन की अर्थव्यवस्था के बराबर था। चीन आज अपने रक्षा बजट पर ढाई सौ अरब डॉलर सालाना खर्च कर रहा है। उसने अमेरिका की तर्ज पर दुनिया के कई बंदरगाहों को विकसित कर

अपने सैन्य अड्डे विकसित करने की दिशा में तेजी से कदम बढ़ाए हैं। चीन के सार्वजनिक क्षेत्र से लेकर निजी क्षेत्र की कंपनियां तक पूरी दुनिया में निवेश कर रही हैं। जहां भारतीय कंपनियां विदेशों में पूंजी निवेश को लेकर सोचती हैं, वहीं चीन की कंपनियां विदेशों में दनादन पैसे लगा रही हैं।

अफ्रीकी से लेकर एशियाई देश तक चीनी पूंजी के गिरफ्त में हैं। भारत के पड़ोसी देशों पाकिस्तान, बांग्लादेश, म्यांमा और नेपाल में चीन ने खासा निवेश किया है। पाकिस्तान में साठ अरब डॉलर और बांग्लादेश में अड़तीस अरब डॉलर के निवेश पर चीन ने काम शुरू कर रखा है। म्यांमा में चीन खासा निवेश कर चुका है। भारत का पड़ोसी नेपाल चीन की बेल्ट एंड रोड इनीशिएटिव परियोजना का भागीदार बन चुका है। चीन-नेपाल के बीच बृहद हिमालयन रेल, रोड जोड़ योजना पर काम शुरू हो चुका है।

दरअसल जिनपिंग महाबलीपुरम से वापसी के वक्त नेपाल पहुंचे थे। दिलचस्प बात यह थी कि चीनी मीडिया ने जिनपिंग की महाबलीपुरम यात्रा से ज्यादा नेपाल यात्रा को महत्त्व दिया। इस सच्चाई से इंकार नहीं किया जा सकता है कि महाबलीपुरम की यात्रा से पहले जिनपिंग ने पाकिस्तानी प्रधानमंत्री इमरान खान से मुलाकात कर संकेत दिया था कि पाकिस्तान चीन के लिए काफी अहमियत रखता है। जिनपिंग की भारत यात्रा से ठीक पहले इमरान खान का चीन दौरा और महाबलीपुरम से लौटते हुए जिनपिंग का नेपाल जाना भारत के लिए सांकेतिक इशारा था कि भारत के दो पड़ोसी मुल्क चीन के लिए भारत से ज्यादा महत्त्वपूर्ण हैं। नेपाली प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली अपने भारत विरोध और चीन समर्थन के लिए खासे जाने जाते हैं।

मोदी और जिनपिंग का संवाद अच्छे परिणाम लाएगा, इसकी पूरी उम्मीद है। लेकिन महाबलीपुरम में जिनपिंग ने कश्मीर को लेकर कोई बात नहीं की। शायद भारत यह मान कर चल रहा है कि कश्मीर पर चीन की नीति में कोई बदलाव नहीं आएगा। जम्मू-कश्मीर को लेकर चीन पाकिस्तान के साथ खड़ा होगा, यह भारतीय कूटनीति के निर्धारकों को पता है। गिलगित-बलतिस्तान, अक्साईचिन और पाक अधिकृत कश्मीर में चीन के आर्थिक हित हैं। यहां पर चीन ने अरबों डॉलर का पूंजी निवेश किया है। भारतीय कूटनीति की परीक्षा यहीं पर होगी। कश्मीर को लेकर चीन, मलेशिया और तुर्की पाकिस्तान के साथ खुल कर खड़े हैं।

महाबलीपुरम वार्ता से पहले पाकिस्तान में तैनात चीनी राजदूत ने कश्मीर को लेकर भारत के खिलाफ बयानबाजी की। चीनी विदेश मंत्री ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में भी कश्मीर को लेकर पाकिस्तान के पक्ष में मोर्चा खोला। लेकिन चीन से होने वाले भारी आयात पर भारत अभी तक चुप है। महाबलीपुरम में कश्मीर पर जिनपिंग ने कोई बातचीत ही नहीं की। हालांकि भारत के पास इस समय चीन से विरोध जताने के लिए काफी कुछ है। अमेरिका चीन को हांगकांग, तिब्बत और पश्चिमी चीन में मानवाधिकार दमन पर लगातार घेर रहा है। उइगुर मुसलमानों के दमन को आधार पर बना कर अमेरिका ने हाल में कुछ चीनी कंपनियों पर प्रतिबंध भी लगाया है। लेकिन भारत फिलहाल हांगकांग तिब्बत और उइगुर मुसलमानों के मानवाधिकारों को लेकर चुप है।

राह का कनेर

विवेक कुमार मिश्र

हरियाली और रास्ता खींचते ही रहे हैं। खासकर तब जब बारिश के दिनों में कहीं जा रहे होते हैं। बारिश के साथ धरती खिल जाती है। धरती का खिल जाना, महकना और रंगों में डूब जाना ही एक तरह से बारिश में पृथ्वी का नहाना है। एक तरह से देखें तो पृथ्वी पर हर मौसम अपने रंग और जज्बे से अपनी ओर खींच ही लेता है, पर बारिश के दिन की बात ही अलग होती है। कोटा से जयपुर के रास्ते पर चलते-चलते सड़क, हरियाली और दूर-दूर तक पसरे खेत अपनी ओर बुलाते से लगते हैं। यहां जीवन जीने की हलचल अलग से दिखती है। जीवन के शांत और सौम्य परिवेश में ऐसा लगता है मानो बादलों से बातें करते हुए जा रहे हों। वे कब आकर बरस जाएंगे, कुछ कह नहीं सकते। बादलों की आवाजाही और धूपछाया के बीच हल्की फुहार और इन सबके साथ सड़क विभाजक यानी डिवाइडर पर खिली हरियाली जीवन का प्रतीक बन कर छाई हुई थी। इस हरियाली में जीवन खिला-खिला दिखता है। डिवाइडर पर मन को भाने वाले पौधे कनेर, बोगनबेलिया, चंपा और ठिगने पौधे जो ज्यादा बढ़ते नहीं पर हरे-भरे बने रहते हैं, इनका हरा-भरा बने रहना राहगीरों को भाता है।

ये पौधे मन की चेतन अवस्था को प्रकट करते हैं। सड़क पर जीना आसान नहीं। यहां वही जी सकता है जो हर तरह के अभावों के बीच रहता आया हो। जीने की इच्छा इतनी प्रबल हो कि भूख-प्यास सब सह सके और इसके बाद खिलखिलाता रहे। सड़क के पौधे तो खिलखिलाते ही रहते हैं और हर मौसम में खुश रहना जानते हैं। इन्हें इस बात से मतलब नहीं कि कोई इनकी फोटो ले रहा है कि नहीं। फोटो संस्कृति से बहुत दूर ये मगन रहते हैं। कनेर को मगन भाव से देखता हूं तो यही लगता है कि ये शायद सड़क मार्ग के लिए ही बने हैं। सड़क पर धुआं हो या धुंध, ये सब सह लेते हैं, खिलखिलाते रहते हैं।

दुनिया मेरे आगे

कोई जरूरी नहीं कि सबको व्यवस्थित जगह ही मिले। होना तो यह चाहिए कि जो जगह मिल गई है, कोई वहीं पर मगन हो ले। खिलखिलाना ही मनुष्यता का उत्सव है। इस उत्सव को बारिश में पूरी तरह से खिलने का अवसर मिलता है। जब बारिश से पत्तियां धुल जाती हैं और जीवंत हो जाती हैं तो लगता है कि हां, जीवन जी लिया। जीवन जीने का यही भाव कनेर की पत्तियों, फूल और हरियाली के साथ रास्ते को देख कर लगता है। राह के कनेर, बोगनवेलिया बरबस ही ध्यान खींच लेते हैं। कनेर हरे देह पर धारण किए रहते पीले-पीले फूल। ये मन में बस जाते हैं। इनकी जीवंत छवि, पीले फूल इस तरह सज जाते हैं कि पूछिए मत! मन खिल जाता है। वहीं आसपास पुराने पड़ चुके पीले जर्जर फूल भी पड़े रहते हैं। कनेर भौतिकता के अथाह सागर में अपनी निर्लिप्तता के लिए जाना जाता है। इसे चकाचौंध छूकर भी नहीं आई। याद आता है कि गांव में भी कनेर कुएं के पास खड़ा है। वर्षों से इसी तरह खिला पड़ा रहता है। कोई देखभाल नहीं, कोई देखे न देखे, कनेर खिला रहता।

कनेर में खिलने की एक स्वाभाविक वृत्ति है। मौसम की मार को सहते हुए भी खिल जाता है। जब लोगबाग इसके पास आते हैं तो फूल और फल (कोइना) देने के लिए तत्पर हो जाता है। लोगबाग पूजा भाव से फूल तोड़ते हैं तो बच्चे खेल भाव से। कनेर पर कोई फर्क नहीं पड़ता। इसे किसी संग साथ की जरूरत महसूस नहीं होती। भाव-अभाव, सबमें खिलना, बने रहना जानता है। कनेर एक प्रतीक है जीवन के इस भाव का कि जब आपको खिलना है, मगन रहना है तो किसी की परवाह न करें। यह मत सोचें कि कौन क्या सोचेगा, क्या कहेगा! अगर यह सोचेंगे तो कुछ कर ही नहीं सकते। कौन क्या सोचता है, यह महत्त्वपूर्ण नहीं है, बल्कि आप क्या सोचते हैं, आपकी सोचने की प्रक्रिया क्या है, इस पर काम करें और अपनी गति को प्रारंभ करें।

यह मन की एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। इसे दूसरों के आधार पर बनाना गलत होगा। यह तभी संभव होगा, जब आप किसी की भी परवाह किए बिना अपने मूल स्वभाव में जीते हैं। मूल स्वभाव में बने रहना और हर स्थिति के साथ जीना, साक्षात्कार करना और हर तरह की प्रतिकूलताओं को अपने भीतर जज्ब करने का भाव ही आपको बड़ा बनाता है। कनेर तो बस अपनी जगह पर बना रहता है। कोई आए तो ठीक, न आए तो ठीक। संसार में जीने से बढ़ कर कुछ नहीं है। राह के डिवाइडर पर तन कर बने रहने वाले ये फूल जीवट के प्रतीक भी कहे जा सकते हैं। यहां कोई देखने वाला है या नहीं है! यहां तो सख्त जान का पौधा और आदमी ही चल पाएगा।

दूरियों के बावजूद

एक बात तो बिल्कुल सच्ची और बड़ी दिलचस्प भी है कि जब पाकिस्तान का विरोध करने की धुकधुकी होने लगती है तो चाहे राजनीति वाले हों या तथाकथित देशभक्त और मीडिया के चैनल, सब में एक-दूसरे से आगे निकल जाने की होड़ लग जाती है। विपक्ष भी अन्यथा असहमत होने के बावजूद इस प्रसंग में हामी भरने की प्रतिबद्धता दिखाता है। एक सच्चे देशभक्त होने का सबसे बड़ा सबूत और सुकून ही जैसे यह हो चला है कि पाकिस्तान की जम कर धुनाई करो, खिल्ली उड़ाओ और सब तरफ लकीरें खींच कर उसे दुनिया के नक्शे पर 'अलग-थलग' करा देने का श्रेय लूटो। विचारों में तालमेल और कहीं हो या न हो, पर इस सियासी खेल में सभी शामिल हो जाते हैं। चलिए, कोई एक बिंदु तो है जहां आकर हमारे प्रमुख राजनीतिक दलों में 'मिले सुर मेरा-तुम्हारा' हो जाता है।

यह सोच कर थोड़ी तसल्ली होती है, क्योंकि पहले ऐसा नहीं होता था, या कम होता था। लेकिन अब तो स्थिति यह है कि पाकिस्तान को पड़ोसी की बजाय दुश्मन बताने पर सहमति वाली गर्दन हिलाना बेहतर माना जाता है। इस तरह देखें तो पाकिस्तान का शुक्रिया करना बनता है। पाकिस्तान को लेकर भारतीय जनता पार्टी के मिजाज थोड़े अलग हैं। लोकसभा चुनावों के दौरान भी पार्टी का प्रचार-राग पाकिस्तान ही रहा। बालाकोट, पुलवामा वगैरह इसी राग के वादी-संवादी स्वर थे।

लेकिन यह जरूरी नहीं है कि एक दल या उसके समर्थकों की सोच संपूर्ण देश के मन का वशीकरण कर ले। कश्मीर के संदर्भ अलग हैं। लेकिन बंटवारों के दंश झेलने वाला देश का छोटा-सा सूबा पंजाब, जो इधर 'चढ़दा पंजाब' कहाता है, सात दशक बीत चुकने के बाद भी अपनी देह के कटे हिस्से 'लैंहदा पंजाब' को भीतर धड़कते हुए पाता है। यह स्थिति दोनों तरफ एक-सी है और ये अहसास हमेशा बने रहेंगे। महज इसलिए नहीं कि दोनों के पुरखों की राख दूसरी तरफ वाली मिट्टी में समाई हुई है। बल्कि इसलिए ज्यादा कि उनके लिए वह धरती बाबा नानक और अपने सूफियों, पीरों-फकीरों के नाम पर पूजनीय है। दहशतगर्दी की आंधियां सरहद के उस पार से उठें या इस पार से, चुनावी मंचों पर खड़े सियासतदान जंग की धमकियां दें या परमाणुओं की, पंजाब यह सब झेलते हुए भी दूरियां मिट जाने की कल्पना से रोमांचित होता रहा है।

● *शोभना विज, पटियाला*

आपदा और सजगता

ऐसी कई प्राकृतिक या अप्राकृतिक घटनाएं होती हैं जिसके कई पक्ष होते हैं। पटना में बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदा को देखें तो यह घटना एक ओर जहां प्रकृति की मार है, वहीं दूसरी ओर व्यवस्था की विफलता। इसीलिए कह सकते हैं कि यह कोई नई आपदा नहीं है कि जिसके प्रति हम जागरूक नहीं रहें और हमारी व्यवस्था अनुकूल न रहे। यह तो आदिकाल से मानव जीवन ही नहीं वरन संपूर्ण जीव जगत के लिए संकट का विषय है। सर्वविदित है कि विश्व भर में जापान इकलौता देश है जहां भूकम्प जैसी आपदा आम बात है, फिर भी वह एक संपन्न राष्ट्र है। सजगता और विकसित विनिर्माण विधि द्वारा जापान और उसके नागरिकों ने इस चुनौती से लड़ना सीख लिया। हम व्यवस्था और प्रकृति को दोष न देकर यदि आज भी सजग हो जाएं तो बड़ी-से-बड़ी आपदाओं का सामना बिना व्यापक क्षति के कर सकते हैं। हर व्यक्ति जागरूक हो, व्यवस्था सजग हो।

● *कर्मवीर साव, श्रीनगर, बेलहर, बांका, बिहार*

वृद्धि की उम्मीद

रिजर्व बैंक द्वारा पेशेवर आकलनकर्ताओं के बीच कराए गए छमाही सर्वेक्षण में भी जीडीपी वृद्धि दर अनुमान 6.1 पर रहा। 2020-21 के लिए यह सात फीसद तक पहुंचा है। यह केंद्रीय बैंक के स्वयं के अनुमान के मुताबिक है। रिजर्व बैंक के गवर्नर शक्तिकांत दास ने बार-बार कहा है कि जब भी गुंजाइश होगी केंद्रीय बैंक व आयकर परिवर्तन संबंधी चिंताओं को दूर करने और अर्थव्यवस्था को उबारने में मदद करता रहेगा। अगस्त-सितंबर में निवेश और वृद्धि बढ़ाने के सरकार के आय, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश नीति में सुधार, सरकारी बैंकों में पूंजी डालने और सरकारी बैंकों के विलय से जीडीपी वृद्धि दर की रफ्तार बढ़ाई जा सकती है। इसके अलावा कारपोरेट आयकर की दर में कमी, दबाव वाली परिसंपत्तियों के तेजी से समाधान और रेपो दर में कटौती का लाभ नीचे तक पहुंचाने से वृद्धि बढ़ाने में मदद मिलेगी।

● *अजीत कुमार गौतम, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश*

बैंकों की भूमिका

किसी देश के बैंकों पर उसकी अर्थव्यवस्था का दारोमदार होता है। ऐसे में जब बैंकिंग व्यवस्था संकट से गुजरती है या उस पर संदेह गहराता है तो उससे अर्थव्यवस्था भी खासा प्रभावित होती है। भारत की अर्थव्यवस्था आज जिस स्थिति में है उसमें बैंकों की बड़ी भूमिका है।

यह सर्वविदित है कि बैंकिंग व्यवस्था वित्तीय लेन-देन से चलती है और विकास भी इसी से करती है। लेकिन तमाम घोटालों के बाद, मसलन- पंजाब नेशनल बैंक, पंजाब महाराष्ट्र को-ऑपरेटिव बैंक (पीएमसी बैंक)- लोग बैंकों पर ज्यादा भरोसा करने को तैयार नहीं हैं। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के सिमटने और बदनामियों के बाद ग्राहक वर्ग बैंकों की ओर बढ़ने से पहले एक बार सोच रहा है। ऐसे में जब नगदी बैंकों तक नहीं पहुंचेगी तो यह आने वाले समय में अर्थव्यवस्था के लिए और चुनौती भरा होगा।

दूसरी ओर अगर बैंकों के नजरिए से देखें तो गैर निष्पादित संपत्तियां उनके लिए गंभीर समस्या बनी हुई हैं। सरकार भी इन बैंकों की मदद करने के बजाय खुद इन पर निर्भर है। साथ ही बैंकों पर सरकारी योजनाओं को लेकर चलने का भी बोझ है। रेपो दर में लगातार कटौती रिजर्व बैंक की मजबूरी हो गई है मगर उसका कुछ खास असर नहीं हो रहा। अब इस स्थिति में सरकार को कोई ठोस और दूरदर्शी कदम उठाने होंगे ताकि बैंकों से लेकर ग्राहक तक को बल मिले और अर्थव्यवस्था को गति दी जा सके।

● *संजय दूबे, आईआईएमसी, नई दिल्ली*

चौपाल

किसी भी मुद्दे या लेख पर अपनी राय हमें भेजें। हमारा पता है : ए-8, सेक्टर-7, नोएडा 201301, जिला : गौतमबुद्धनगर, उत्तर प्रदेश

आप चाहें तो अपनी बात ईमेल के जरिए भी हम तक पहुंचा सकते हैं। आइडी है : chaupal.jansatta@expressindia.com